# श्री फलोदी पार्श्वनाथ तीर्थ (मेड़ता रोड) का इतिहास

लेखक—

बकशी माणकचन्द जैन, "साहित्य सुधाकर"

प्रकाशक—

दीपचन्द माणकचन्द जैन

श्री फलोदी पार्श्वनाथ महाविद्यालय, मेड़ता रोड (राज०)

प्रथमा वृति २०१६

[ १००० ]

मूल्य-५० पैसा

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

# प्रस्तावना

राजस्थान के प्रसिद्ध एवं प्राचीन तीर्थों में श्री फल...
...ा तीर्थ भी एक है। यह स्थान काफी पुराना है यहां के
...वी के मंदिर में कुटिल लिपिका एक प्राचीन शिला लेख
...आठवीं नवीं शताब्दी का होगा।

इसे नागरीक प्रचारिणी सभा के अंक में भँवरलालजी नाहटा ने प्रकाशित करवाया है। बारहवीं शताब्दी से भगवान पार्श्वनाथजी की प्रतिमा जैन संघ में एक चमत्कारी प्रतिमा के रूप में प्रसिद्ध है। खरतरगच्छ की युग प्रधानाचार्य गुर्वावली में तेरहवीं चौदहवीं शताब्दी में जो कई स्थानों के खरतरगच्छीय संघ इस महान तीर्थ की यात्रा के लिये आये उनका महत्वपूर्ण उल्लेख है।

वादि विजेता आचार्य श्री जिनपति सूरिजी ने संवत् १२३४ में यहां के विधि चैत्य में पार्श्वनाथ प्रतिमा की स्थापना की थी। गुर्वावली में लिखा है—"सं० १२३४ फलवर्धिकायां विधिचैत्ये पार्श्वनाथ स्थापितः।" (सिंघी जैन ग्रन्थमाला से प्रकाशित खरतरगच्छ बृहद् गुर्वावली पृष्ठ २४)।

इस तीर्थ के इतिहास को प्रकाशित करने की वर्षों से ही मांग थी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मैने संक्षेप में एक लेख "अभय संदेश" में
और फलोदी पार्श्वनाथ के सैकड़ो स्तोत्र स्तवन
उन सब का संग्रह करके एक विस्तृत इतिहास प्रका-
की मेरी योजना है। जब तक वह पूरी न हो जाय श्रद्धालु
को इस संक्षिप्त इतिहास से लाभ उठाते रहना चाहिये। इस
दिशा में माणकचन्द बख्शी ने जो यह लघु प्रयास किया है वह
आशा है सर्व साधारण के लिये उपयोगी सिद्ध होगा।

Serving JinShasan
044628
gyanmandir@kobatirth.org

अगरचन्द नाहटा

दिनांक २६-८-६२

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

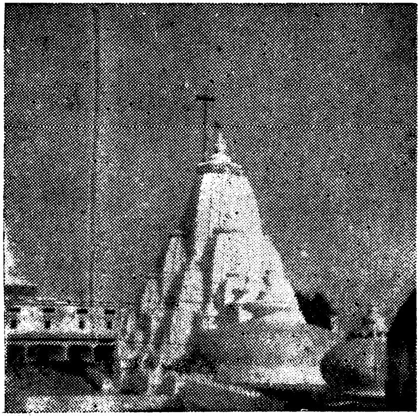

श्री फलोदी पार्श्वनाथ तीर्थ का भव्य जिनालय

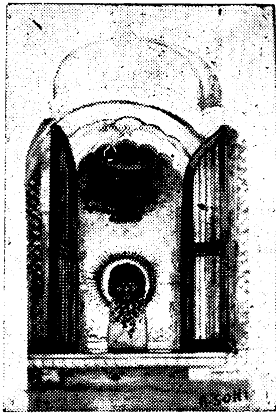

महान् चमत्कारिक श्री फलोदी पार्श्वनाथ तीर्थ के अधिष्टायक देव !

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# श्री फलोदी पार्श्वनाथ तीर्थ का इतिहास

परम पिता परमात्मा श्री फलोदी पार्श्वनाथ भगवान को नमस्कार करके तीर्थ का इतिहास प्रकाशित करता हूँ।

जैन धर्म में पूर्वाचार्यों ने श्रावकों के योग्य सत् कार्यों में तीर्थ यात्रा एक प्रधान सत् कार्य माना है। खास करके जिन २ स्थानों पर तीर्थंकर भगवानों के च्यवन, जन्म, दिक्षा, केवल ज्ञान और मोक्ष इन पांच कल्याणकों में से कोई भी कल्याणक किसी भी स्थान पर हुआ है उसे शास्त्रों में ग्रन्थकारों ने तीर्थ की संज्ञा दी है। अतः हम उन स्थानों की यात्रा करके तीर्थ यात्रा का लाभ प्राप्त करते हैं। इसके अतिरिक्त तीर्थंकर भगवन्तों और उत्तम साधु-पुरुषों के विहार, तप, अनशन आदि से पवित्र हुए स्थानों एवं कोई विशिष्ट प्रभावशाली और पवित्र वातावरण वाले स्थानों को भी तीर्थ रूप में माना है। इस तरह के स्थानों में सिद्धाचल, सम्मेत-शिखर, पावा-पुरी चम्पापुरी, गिरनार, रत्नपुरी, अयोध्या, हस्तिनापुर, राजगृही तक्षशिला, मथुरा, अहिछत्रा, फलोदी पार्श्वनाथ, राणकपुर आबू कापरड़ा, जीरावल्ली केशरिया जी, जैसलमेर शंखेश्वर, कुलपाक जी, अन्तरिक्ष जी नाकोडा अजहरा पार्श्वनाथ वगैरह २ अनेक तीर्थ जैन समाज में प्रसिद्ध है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तीर्थ स्थानों की महिमा और तीर्थ यात्रा करने की प्रथा सिर्फ जैन समाज में ही है ऐसी बात नहीं है अपितु ससार के सभी प्राचीन धर्मों में तीर्थ यात्रा की महिमा और उसके द्वारा बहुत फल प्राप्त होने का उल्लेख मिलता है। सनातनियों में भी काशी, हरिद्वार जगन्नाथपुरी, द्वारिका नाथद्वारा मथुरा, वृन्दावन गया आदि अनेक तीर्थ प्रसिद्ध है।

बौद्ध धर्मावलंबियों में कपिल वस्तु, कुशीनार, मृगदाव बौधि गया, सांची, सारनाथ आदि तीर्थ प्रसिद्ध है। उसी तरह मुसलमानों में मक्का मदीना, अजमेर, सिक्खों में अमृतसर, पटना, दिल्ली ईसाइयों में जेरुसलम, रोम आदि तीर्थ प्रसिद्ध है। कहने का तात्पर्य यह है कि हिन्दुस्तान के प्रायः प्राचीन सभी धर्मों में तीर्थ स्थानों का एवं तीर्थ यात्राओं का बड़ा ही महत्व रहा है।

महा पुरुषों के चरणों से वि भूषित पवित्र भूमि के दर्शन व स्पर्शन करने से मुमुक्षु महानुभावों के हृदय में भावोदकता और पूज्य वृति प्रकट होने के साथ हृदय की मलीन वासनाओं का क्षय होता है। तीर्थ यात्रा का मुख्य फल यही है कि तीर्थ स्थानों के पवित्र अणु अपनी आत्मा को पवित्र करते हुए अपवित्रता को दूर करते हैं। तीर्थ स्थानों पर जाने से विलासी एवं ऐश आरामी जीवों में भी धार्मिक भावना पैदा होती है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इसीलिये तो शास्त्रकारों ने तीर्थ की व्याख्या करते हुए कहा है कि:—"तारयतीति तीर्थं" यानि आत्मा को तारे वही तीर्थ है।

श्री जीवा भिगम सूत्र, श्री राय पसेनी सूत्र श्री जंबूद्वीप पन्नति सूत्र आदि में शाश्वती जिन प्रतिमा, पूजन विधि लिखी है। आसोज और चैत्री ओली में देवता नदीश्वर द्वीप की यात्रा करने जाते हैं और महोत्सव करते हैं जिसके प्रमाण जगह २ सूत्रों में मिलते हैं। इसी प्रकार श्री भगवती सूत्र में लिखा है जंघा चारण, विद्या चारण, मुनि नंदीश्वर द्वीप की यात्रा को जाते हैं इससे यह सिद्ध होता है कि शास्त्रों में जिनेश्वर भगवान के पूजा की विधि सुचारु रूप से मिलती है। जिस प्रकार प्राचीन जैन सूत्रों में जिनेश्वर देव के पूजा के पाठ मौजूद हैं उसी प्रकार वैदिक साहित्य में भी मूर्ति पूजा के प्रमाण मिलते है। इससे यह सिद्ध होता है कि भारत में मूर्ति पूजा की ऐतिहासिकता असंदिग्ध है।

इस कलिकाल में श्री जिन मूर्ति एवं श्री जिन आगम ही तारणहार है। तीर्थ-जिन मूर्ति मंडित होने से उसकी सेवा उच्चकोटि को मानी गई है।

हमारे राजस्थान प्रांत में भी अनेक तीर्थ हैं जैसे—ओसियां राणकपुर, जैसलमेर कापरड़ा, वरकाणा नाकोड़ा तथा श्री फलोदी-पार्श्वनाथ आदि। वर्तमान में श्री मंदिर जी में श्री फलवृद्धि पार्श्वनाथ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भगवान की जो प्रतिमा प्रतिष्ठित है उसका प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार इतिहास इस प्रकार हैं:—

(१) फलवर्धी तीर्थ प्रबन्ध (P.=B.R. प्रति) (५७) अथैकदा श्री देवाचार्याः शाकंभरी प्रति विजहुः। अन्तराले मेडतक पुरपार्श्वे फलवर्धिकाग्रामे मासकल्पं स्थिताः तत्र पारसनामा श्राद्धस्तेन जालिबन मध्ये लेष्टराशिर्दृष्टः। अम्लानशित पत्रिका पुष्पैः पूजितः। लेष्टवो बिरलीकृताः। मध्ये बिम्बं दृष्टम्। तेन श्री देव सूरिभक्तेनः गुरवो विज्ञापिताः। तैः सूरिभिर्धामदेवं सुमतिप्रभगणि–वासान् दत्वा प्रहितौ। धामदेव गणीना वासक्षेपः कृतः पश्चाद्देवगृहे निष्पन्ने श्री जिन चन्द्रसूरयः। स्वशिष्याः वासानर्पयित्वा प्रहिताः। तैश्च ध्वजारोपः कृतः। पश्चातत्र प्रसादेऽजमेरीय श्रेष्ठि वर्गो नागपुरीय–जाम्बड़ वर्ग समायातः ते गोष्ठि का जाताः। संवत् ११६६ वर्षे (P. प्र तौ ११८८) फाल्गुण सुदि १० गुरौ बिम्बस्थापनम् संवत १२०४ वर्षे महा सुदी १३ शुक्रे कलाशध्वजारोपः इति फलवर्धीका तीर्थ प्रबन्ध।

(सिन्धी जैन ग्रंथमाला तरफ से प्रकाशित पुरातन प्रबंध संग्रह पृष्ठ ३१ रचियता नागेन्द्रगच्छीय श्री उदय प्रभ सूरि शिष्य जिन-भद्र वि० सं० १२६० में रचना की गई)।

अर्थः— एक समय आचार्य श्री वादीदेव सूरिजी महाराज शाकं

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भरी पधार रहे थे। तब बीच में मेड़ता के पास फलोदी ग्राम में मास कल्प रहे। वहां पर पारस नाम के एक श्रावक ने जालीवन के बीच श्रीपार्श्वनाथ भगवान का तीर्थ प्रकट किया उसने एक दिन जाली-वन के बीच में एक ढेफा का टीबा देखा जो अकमलाये हुए फूलों से पूजित था। उसने उस टीबे को दूर करवाया तो श्री जिनबिम्ब के दर्शन हुए। वह श्रावक श्री वादीदेव सूरि का उपासक था अतः उसने आकर श्री गुरु महाराज से प्रार्थना की।

तब पूज्य आचार्य महाराज ने धामदेव गणि और सुमतिप्रभ गणि को वासक्षेप देकर भेजा। वहां पर पधार कर श्री धामदेव गणि ने जिनबिम्ब पर वासक्षेप किया इसके बाद वहां पर मन्दिर बना। तब आचार्य महाराज ने अपने शिष्य जिनचन्द्र सूरिजी को वासक्षेप देकर भेजा और श्री जिनचन्द्र सूरिजी महाराज ने वहां पधार कर ध्वजा रोहण किया इद्रा कलश चढाया और उसको वासक्षेप किया। पीछे इस जिनालय में अजमेर के सेठ और नागौर के जम्बड श्रावक आकर बसे और इसके व्यवस्थापक बने। (P. प्रति के पाठ के अनु-सार संवत् ११६६ का फागुण सुदी १० गुरुवार को श्री पार्श्वनाथ भगवान के बिम्ब भी प्रतिष्ठा हुई सं० १२०४ माघ सुदी १३ शुक्रवार को कलशारोपण तथा ध्वजा रोपण किया।

इस तीर्थ की स्थापना के सम्बन्ध में दो मत पाये जाते हैं पहला

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

"विविध तीर्थ कल्प के" अनुसार सं० ११८१ में राज गच्छ के प्रभावक आचार्य श्री धर्मघोष सूरिजी ने पार्श्वनाथ के चैत्य शिखर की प्रतिष्ठा की थी। दूसरी ओर "पुरातन प्रबंध संग्रह" में प्रकाशित फल वृद्धी तीर्थ प्रबंध के अनुसार सं० ११६६ के फागण सुदी २ गुरुवार कों बिम्ब की स्थापना हुई। और सं० १२०४ के माघ सुदी १३ शुक्रवार को कलश ध्वजा रोपण किया गया।

देव सूरि ने स्वशिष्य धर्मदेव और सुमतिप्रभ को वासक्षेप देकर भेजा था और धामदेव ने वासक्षेप किया "उपदेश सप्ततिका" के अनुसार संवत् १२०४ में देव सूरि के शिष्य मुनि श्री चन्द्र सूरि जी ने प्रतिष्ठा करवाई पर वास्तव में "तिविध तीर्थ कल्प" का उल्लेख अधिक प्रमाणिक प्रतीत होता है। राज गच्छ की पट्टावली में लिखा है:—

चैराचायेः—श्री फलवृद्धी पुरमंडन श्री पार्श्वदेव प्रभृति जिनाना पंचो-तर शात १०५ प्रसादेसु प्रतिष्ठा विहिता")

आचार्य श्री धर्मघोष सूरिजी का प्रभाव शाकंभरी प्रदेश में बहुत अधिक था। इस प्रदेश के शासक-नृपति गण उनके भक्त रहे हैं अतः उनके द्वारा प्रतिष्ठा होना अधिक सभव है। देव सूरि का नागौर प्रदेश में अच्छा प्रभाव था परन्तु प्रबंध में उनके स्वयं पधारने का उल्लेख न होकर शिष्य द्वारा वासक्षेप भेजने का निर्देश है। अतः

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

संभव है कि इनके शिष्य गणों का प्रतिष्ठा के समय आना हुआ होगा। कक्क सूरि रचित श्री फलोदी पार्श्वनाथ स्तवन में संवत् ११८१ में पार्श्वनाथ भगवान की स्थापना का उल्लेख है। एवं "विनय सोम रचित" स्तवन में भी यही समय दिया है। अतः ११९९ में जो बिम्ब स्थापना होने का उल्लेख है उस पर विचार करने से यही प्रतीत होता है कि मूल बिम्ब स्थापना ११८१ में ही हुई है। तदन्तर मन्दिर बनाया जाकर ११९९ में नवनिर्मित प्रसाद में बिम्ब स्थापित किया गया। प्रथम स्थापना के समय में आचार्य श्री धर्मघोष सूरिजी ने प्रतिष्ठा की और परवर्ती स्थापना के समय वादीदेव सूरि के शिष्यों ने वासक्षेप किया होगा। ध्वजा रोपण उसके और ५ वर्ष बाद संवत् १२०४में पारस श्रेष्ठी द्वारा करावा जाने का उल्लेख मिलता है। "विविध तीर्थ कल्प" के अनुसार सुरताण साहबुद्दीन ने मूल बिम्ब को खण्डित किया था। क्षेमराज के रचित पार्श्वनाथ फाग के अनुसार खिलजी शेरखान ने पार्श्वनाथ प्रसाद को फिर खण्डित किया अतः संवत् १५५२ में सूरवंशी संघपति शिवराज के पुत्र हेमराज ने मन्दिर का उद्धार करवाया। हेमराज की गजारूढ मूर्ति सम्मुख सेवा कर रही है। ऐसा फाग में लिखा है।

विक्रम की चौदहवीं शदी में महा प्रभावक जैनाचार्य श्री जिन-प्रभ सूरि श्वरजी तुगलक सुल्तान मोहम्मद के शाही दरबार में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रतिष्ठा प्राप्त आचार्य हुए। आपने अनेक ग्रन्थों का निर्माण किया उनमें "विविध तीर्थ कल्प" प्रमुख ग्रन्थ है। जो इस तीर्थ के सच्चे इतिहास को प्रकट करता है।

"यहां उसका आचार्य श्री जिन कवीन्द्रसागर सूरिजी का किया हुआ अविकल अनुवाद दिया जाता है"।

## (विविध तीर्थ कल्प का अनुवाद)

श्री फलवृद्धी चैत्य में विराजमान श्री पार्श्वनाथ को नमस्कार करके कलिदर्प को दलन करने वाले कल्प को जैसा सुना कहता हूँ।

(२) सवा लख देश में मेड़ता नगर के पास श्री वीर भगवान आदि अनेक देवालयों से सुन्दर फलवृद्धी नाम का एक गांव है वहां फलवृद्धी नाम की एक देवी का ऊँचे शिखर वाला मन्दिर बना है। वह ऋद्धि से समृद्ध होने पर भी समय के प्रभाव से उजड़ सा गया फिर भी वहां कितनेक व्यापारी आकर बसें। उनमें श्री श्रीमालवंश में मुक्तामणि के सामान धार्मिक लोगों का अग्रगामी धंधल नाम का एक परम श्रावक था दूसरा ओसवाल कुल आकाश में चन्द्रमा के समान शिवंकर नाम का सेठ था उन दोनों के पास बहुत सी गायें थी उनमें धंधल की एक गाय हमेशा दूध दुहने पर भी दूध नहीं देती थी। ग्वाले ने इस सम्बन्ध में सौगन खाकर अपने आपको निरपराधी बताया। बाद में ग्वाले ने इस के कारण की ठीक ढंग से जांच की।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जांच करते हुए एक दिन वही एक ऊँचे रडे पर बोरड़ी के पास उसी गाय के चारों स्तनों से दूध झरता देखा। ऐसा हमेशा देखते हुए उसने धंधल सेठ को भी यह घटना बताई। धंधल ने सोचा कि इस जगह कोई यक्ष आदि देवता भूमि मध्य होगा।

इस घटना को देखकर सेठ अपने घर आया रात्रि में वह सुख से सो गया उस समय उसको एक स्वप्न आया उसमें किसी पुरुष ने आकर कहा कि "इस रडे के नीचे गर्भ गृहदेव कुलिका में भगवान पार्श्वनाथ स्वामी विराजते हैं उनको बाहर निकाल कर तुम पूजो। इस बात को जानकर धंधल सेठ ने प्रभात में शिवंकर सेठ को अपना स्वप्न वृतान्त कह सुनाया इससे आश्चर्य चकित दोनों ने विशिष्ट पूजा विधान पूर्वक ओडो से उस रडे की भूमि को खुदवाया और गर्भ गृहदेव कुलिका सहित सप्त फणा मंडित भगवान पार्श्वनाथ स्वामी को प्रकट किया। प्रति दिन शानदार ढंग से वे दोनों पूजा करते रहे। इस प्रकार भुवननाथ भगवान को पूजते हुए उन के अधिष्टायक देवों ने जिन मंदिर बनाने का स्वप्न में आदेश दिया इस पर उन दोनों ने अपने वैभव के अनुरूप मंदिर बनवाना शुरु किया इसके लिये कारीगर लोग प्रवृत हुए जबकि अग्रमंडप तैयार हुआ तब अल्प ऋद्धि वाले होने से द्रव्य व्यय की असमर्थता के कारण कमठाणा रुक गया। इससे उन दोनों को अत्याधिक खेद

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हुआ। एक दिन रात्रि में अधिष्टायक देव ने स्वप्न में कहा कि चिड़ियों की चहचहाट के पूर्व प्रातः काल प्रभु के आगे हमेशा सोनैयो का स्वस्तिक देखोगे। उन सोनैयो को मंदिर के काम में खर्च करना। अब प्रति दिन भगवान की प्रतिमा के सम्मुख सोनैयों का स्वस्तिक उन दोनों को मिलता था और फिर से उन्होंने उस अधूरे छोड़े हुए मंदिर के निर्माण को वापिस शुरु किया।

जबकि त्रिभुवन जन मन को खुश करने वाले छोटे बड़े ५ मंडप तैयार हो गये। करीब २ मंदिर पूर्ण हो गया तब उनके बेटों ने सोचा यह द्रव्य कहां से आता है। जिससे की बिना रुके कमठा आगे बढ़ रहा है। एक दिन गहरी प्रभात में उन बेटों ने थम्भे के पीछे छिपकर देखना शुरु किता। उस दिन अधिष्टायक देव ने मोहरों का साथिया न बनाया। निकट काल में म्लेच्छों का राज्य होगा ऐसा मानकर अधिष्टायक देव ने प्रयत्न पूर्वक आराधना करने पर भी द्रव्य पूर्ति नहीं की। इसी अवस्था में मंदिर का कमठा रुक गया। विक्रम संवत् ११८१ में राजगच्छ के मंडन रूप श्रीशीलभद्रसूरिजी महाराज के पद पर प्रतिष्ठित एवं महावादी दिगम्बर पंडित गुण चन्द्र को जीतने से प्राप्त प्रतिष्ठा वाले श्री धर्मघोष सूरिजी महाराज ने श्री पार्श्व भगवान की मंदिर के चतुर्विध संघ के समक्ष प्रतिष्ठा करवाई।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कालान्तर में कलिकाल महात्म्य से व्यन्तर केलिप्रिय और अस्थिर होते हैं इसलिये अधिष्टायक देव के प्रमाद-वश असावधान होजाने पर सुल्तान शाहबुद्दीन ने मूल बिम्ब को खण्डित किया। बाद में सावधान हुए अधिष्टायक ने म्लेच्छ राजा को और उन म्लेच्छ सैनिकों को अंधे बना दिये। खून की उल्टियाँ करवादी इस प्रकार अधिष्टायक देव ने उपरोक्त चमत्कार दिखाये। तब सुल्तान ने फरमान पत्र निकाला कि "इस देव भवन को कोई भी तोड़ने न पाये।" संघ ने खण्डित प्रतिमा को हटाना चाहा लेकिन अधिष्टायक देव ने हटाने नहीं दिया। खण्डित अंग वाले भगवान के भी कई चमत्कार पाये जाते हैं। प्रतिवर्ष पोष कृष्ण दशमी को प्रभु के जन्म-कल्याणक के दिन चारों दिशाओं से श्रावक संघ आ आकर स्नात्र गीत, नृत्य वांजित्र कुसमाभरणारोप आंतरि इन्द्रध्वजादि मनोहर भजन भक्ति करते हैं। शासन की प्रभावना करते हुए दुश्मनों की दुर्चेष्टाओं का दलन करते हैं और भारी पुण्य पुंज को इकट्ठा करते हैं।

इस मंदिर में धरणेन्द्र पद्मावती क्षेत्रपाल, अधिष्टायक सघ विघ्न समूह को शान्त करते हैं एवं भक्त लोगों के मनोरथों की पूर्ति करते हैं यहीं पर कई बार रात्रि में रहे हुए भक्त लोग हाथ में स्थिर दीपक लिये हुए एक पुरुष को मन्दिर में घूमता हुआ देखते हैं। इस

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महान तीर्थ-भूत श्री फलोदी पार्श्वनाथ तीर्थ के दर्शन कर लेने पर कलिकुंड, कुकुंटेश्वर, श्री पर्वत शंखेश्वर, सेरीशाह, मथुरा, बनारस, अहिछत्रा, स्तम्भनपुर अजारा, प्रवर नगरदेव, पट्टन, कटेड़ा, नागद्रह, श्री पुरसामिणी चारुप, ढिपुरी, उज्जैयनी, शुद्ध दन्ती हरिकखी लिद्रोड आदि तीर्थ स्थानों पर विराजमान श्री पार्श्व प्रभु की यात्रा का लाभ मिलता है। ऐसा सम्प्रदाय गुरु का उपदेश है। इस प्रकार श्री पार्श्वनाथ भगवान के छोटे से भी कल्प को सुनते हुए महात्माओं को कल्याण की प्राप्ति हो।" इस प्रकार श्री जिन प्रभ सूरिजी महाराज ने संवत् १३८९ के बाद "विविध तीर्थ कल्प" ग्रन्थ समाप्त किया।

वर्तमान समय में श्री फलोदी पार्श्वनाथ भगवान की वही प्राचीन प्रतिमा विद्यामान है। मूलनायक भगवान की प्रतिमा बड़ी ही सुन्दर हैं। देव विमान सदृश्य विशाल एवं भव्य मन्दिर बना हुआ है। मन्दिर में कांच की कारीगरी का काम तथा संगमरमर मीनाकारी का काम देखने योग्य है।

मूलानायक भगबान के आजू बाजू भी प्रतिमायें श्री शीतलनाथ जी तथा अरनाथ जी की प्रतिमा हैं। जिनकी प्रतिष्ठा १६५३ में विनय सूरि जी ने कराई है।

मन्दिर के मूल गम्भारे के पास एक शिला देख विद्यमान है जो इस प्रकार है:—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(१) संवत् १२२१ मार्गशिर सुदी ६ फलवृद्धि कायां देवाधिदेव श्री पार्श्वनाथ चैत्ये श्री प्रागवटवंशीय "रोपि" मुणिमं दसाढाभ्यो आत्म श्रेयार्थ श्री चित्तकूटीय शिल फटसहितंचन्द्र को प्रदत: शुभ भवत् ।

(२) चैत्ये नर भेयेन श्री मलन्द भट् कारिते मंडणे मंडन लक्ष्मां: कारित संवता सुता युगयमोपु श्री ढीरा चैत्पेयेनपिता शुभ्रित लका द्दाताप्रतु विराति सिष्टाराणि ॥२॥ श्रेष्ठी श्री मुनींचन्द्रारट्टा: श्री फलवृद्धी को पुरे उत्तानपटे श्री पार्श्व चैत्ये ऽ चिकरद द्रुत ॥३॥

## आचार्य श्री धर्मघोष सूरिजी महाराज

इसके अतिरिक्त जिन्होंने इस तीर्थ के मुलनायक श्री पार्श्वनाथ प्रमु की प्रतिष्ठा संवत् ११८१ में कराई भी उनके भी चरण मन्दिर में विद्यमान हैं। जिनके चरणों की प्रतिष्ठा संवत् १६२५ फागुण सुदी १० गुरुवार के दिन हुई है। जो उनके द्वारा प्रतिष्ठा कराने को प्रमाणित करती हैं।

वर्तमान में यहां प्रतिवर्ष पोष बदी १० को भगवान के जन्न कल्याणक के दिन मेला भरता है। इसमें आप पास के गांवों के करीब ५०० यात्री आते है और खूब भक्ति पूर्वक भगवान का जन्मोत्सव मनाते हैं। इसी तरह आसोज बदी १० को भी प्रति वर्ष एक बहुत विशाल मेला भरता है। इस मेले में हजारों की तादाद में दूर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दूर से यात्री आते हैं। और भगवान की पूजा प्रभावना आदि करते हैं। यह मेला प्राचिन काल से भरता आया है। आसोज बदी १० के दिन भगवान की रथयात्रा निकलती है। बीकानेर, जोधपुर, जयपुर, मेड़ता तथा स्थानीय विद्यालय की संगीत मंडलियां प्रभु भक्ति करती है। इसके अतिरिक्त सैंकड़ों दुकानें लगती है जिनमें लाखों रुपयों का माल बिकता है।

यहां मन्दिर जी में तथा धर्मशाला में बीकानेर के सेठ श्री अजीतमल जी कन्हैयालाल जी की तरफ से बीजली लगी हुई है।

धर्मशाला का विशाल परकोटा अजमेर के संचेती परिवार की ओर से बना हुआ है जो करीब ३०० वर्ष प्राचीन है।

"आसोज के मेले के प्रबन्ध के लिये एक मेला प्रबन्ध कमेटी भी बनी हुई है। जो प्रतिवर्ष मेले में प्रबन्ध व्यवस्था करती है तथा पिछले साल उस कमेटी ने धर्मशाला के जिर्णोद्धार का काम भी उठाया है तथा धर्मशाला की मरम्मत के लिये पिछले साल कुछ रकम भी इकट्ठी की गई है और जिर्णोधार हो रहा है।" पार्श्वनाथ स्वामी के मन्दिर के अतिरिक्त बाजू में ही चौमुखा शान्तिनाथ भगवान का मन्दिर है। श्री शान्तिनाथ भगवान की प्रतिष्ठा संवत् १८१६ में फागुण सुदी ३ के दिन श्री विजयदेव सूरिजी ने करवाई। जिसका लेख प्रतिमापर विद्यमान है। इस मन्दिर के चारों ओर परकोटा है। इस परकोटे के अंदर एक २४ फुट गहरा तथा १० फुट चौड़ा एक जलकुन्ड भी बना हुआ है। कहते है कि इस मन्दिर में एक यतिजी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महाराज रहते थे जिन्होंने इस मन्दिर में समाधि ली। यतिजी का चौंतरा आज भी विद्यमान है। गांव के वृद्ध लोगों से सुना है कि यतिजी बहुत चमत्कारिक है।

पार्श्वनाथ स्वामी के मन्दिर की धर्मशाला में एक दादावाड़ी भी बनी हुई है। जिनमें दादा श्री जिनदत्त सूरिजी तथा दादा श्री जिन-कुशल सूरीजी महाराज की चरण पादुकाएं विराजमान हैं। दादावाड़ी में जो लेख है वो इस प्रकार हैं:—

श्रीचौरासीगच्छ शृँगारहार जंगमयुग प्रधान भट्टारकपरउपगारी दादाजी श्री श्री१००८ श्री जिनदत्त सूरिजी श्री जिनकुशल सूरिजी रो मन्दिर भडगतिया श्री करणमल जी बेटा सांवतमल जी रा पोता सुखमल जी मेड़तावालों करायों तिणरी प्रतिष्ठा संवत् १९६५ रा जेठ सुदी १२ ने कराय संवत् १९६५ रा आसोज बदी १० ने श्री सकल श्री सघ ने सुपुर्द कियों।

परकोटे के बाहर पश्चिम दिशा की तरफ विद्यालय के संस्थापक आचार्य श्री जिनहरिसागर सूरिश्वरजी महाराज साहब का समाधि मन्दिर बना हुआ है। जिसकी प्रतिष्ठा संवत् २००८ फागुण सुदी २ को सम्पन्न हुई।

इतना विशाल तीर्थ होते हुए भी श्वेताम्बर जैनी का यहां एक भी घर नहीं है। चूंकि यह स्थान राजस्थान के मध्य में स्थित है

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अतः चारों ओर से यात्री यहां आते रहते हैं । बीकानेर, जोधपुर आदि के मध्य का स्थान होने के कारण चौमासा उतरने के बाद इस तीर्थ में साधु एवं साध्वीजी महाराज भी बहुत आया करते हैं परन्तु जैनी का यहां एक भी घर न होने की वजह से उनको आहार पानी एवं अन्य बातों की तकलीफ रहती थी इसके अलावा तीर्थ रक्षा का सवाल सबसे प्रमुख था ।

इन सब बातों को ध्यान में रखकर संवत् २००६ अक्षय तृतिया के दिन यानी बैशाख सुदी ३ के दिन इस तीर्थ पर आचार्य श्री जिनहरिसागर सूरिश्वरजी महाराज साहब ने तीर्थ रक्षक विद्यालय की स्थापना की । इस विद्यालय के होने से अब साधु साध्वियों को तथा यात्रियों को गोचरी तथा भोजनादि व्यवस्था का बड़ा आराम रहता है ।

इस विद्यालय में अब तक करीब १२०० छात्र पढ़कर जीविकोपार्जन कर रहे हैं । विद्यालय राजस्थान सरकार द्वारा रजिस्टर्ड एवं मान्यता प्राप्त है । वर्तमान समय में यहां कुल ८० छात्र पढ़ते हैं । इस विद्यालय की विशेषता यह है कि यहां हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों के बी० ए तक के परीक्षा केन्द्र विभिन्न संस्थाओं के हैं जिनसे सैंकड़ों व्यक्ति फायदा उठाते हैं बहुतसोंके लिये यह विद्यालय एक बरदान है । विद्यालय की एक रजिस्टर्ड कमेटी बनी हुई है । जिसके प्रेसिडेन्ट

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भंवरलालजी तातेड़ हैं।

मन्दिर की धर्मशाला बड़ी विशाल है। धर्मशाला में कुल २३६ कमरे एव अलमारियां हैं। करीब १४ बीघा जमीन में यह धर्मशाला स्थित है। धर्मशाला में पानी के लिये एक ३२ फुट गहरा एवं चौड़ा एक टांका बना हुआ है। मन्दिर जी का एक कुआ भी है जो परकोटे के बाहर पश्चिम दिशा की ओर बना हुआ है। परकोटे के अदर एक बगीचा भी है।

लगभग दस साल पहिले इस तीर्थ का जीर्णोद्धार हुआ जिसकी एक कमेटी बनी थी उसमें श्री भंवरलाल जी तातेड़ मेड़ता सीटी, श्री सुगनमल जी बोथरा नागोर श्री अमरावमल जी लोढा बीकानेर श्री जगनाथमल जी डोसी खजवाना श्री भैरूमल जी सूराणा बीकानेर श्री मगनमल जी समदड़िया नागोर ने अथक परिश्रम करके करीब १ लाख रुपया लगवाकर तीर्थ का उद्धार करके पुण्यानुबंधी पुण्यउपार्जन किया और इतिहास में अमर नाम किया। जोधपुर के भंडारी परिवार के श्री उमरावमल जी श्री इन्द्रचन्द जी भडारी के पूर्वजो ने ३२ फुट गहरी पानी की बावड़ी व मन्दिर में मकानात और बाहिर धर्मशाला की शाल बनाकर अपना नाम अमर किया प्रतिवर्ष इस तीर्थ पर भंडारियों की तरफ से अभी तक ध्वजा चढती है। यह तीर्थ भारत की सारी जैन समाज का है। किसी भी व्यक्ति विशेष या

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सम्प्रदाय विशेष का अधिपत्य नहीं है। समय समय पर प्रबन्ध बदलते रहते हैं।

वर्तमान में इस मन्दिर की व्यवस्था मेड़तासिटी आदि स्थानों श्रावक गण करते हैं कमेटी बनी हुई है। जिसके प्रेसीडेन्ट श्रीमा सेठ भंवरलाल जी तातेड़ हैं। प्रेसीडेन्ट साहब मंदिर के कार्यों दिलचस्पी से भाग लेते हैं।

राजस्थान के जोधपुर डिवीजन के नागौर जिले की मेड़तासिट तहसील के फलोदी ग्राम में यह विशाल तीर्थ स्थित है। स्टेशन व नाम मेड़तारोड है। स्टेशन से मन्दिर जी करीब १ फर्लान्ग की दूरी प स्थित है। यहां रेल्वे का जंकशन होने से हमेशा बीकानेर, दिल्ली जोधपुर, फुलेरा, मेड़तासिटी से कई गाड़ियां दिन व रात में आत जाती हैं। अतः यहां पहुँचने का साधन अति सरल है। मेड़तारोड स्टेशन जोधपुर और फुलेरा के बीच बड़ा स्टेशन है। इस तीर्थ की यात्रा करने वालों को मेड़तारोड स्टेशन पर उतरना चाहिये।

मंदिर जी के सामने एक मोटर स्टेण्ड भी है यहां से मेड़त सिटी, नागौर आदि स्थानों को मोटरें आया जाया करती है।

मेरी बहुत दिनों से यह इच्छा थी कि मैं संघ की जानकारी लिये इस महान् प्रभाविक तीर्थ का इतिहास संघ के समक्ष प्रस् करूँ। अतः अब श्री संघ के समक्ष यह इतिहास सादर समर्पित

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

इतिहास पढने वालों से यह प्रार्थना है कि वे एक बार श्री फलोदी पार्श्वनाथ तीर्थ की यात्रा करके पुण्य लाभ अवश्य उठावें ।

यहां का अधिष्टायक देव महान चमत्कारिक है, मैंने स्वयं ने कई चमत्कार देखे हैं । जो व्यक्ति शुद्ध मन से प्रभु की पूजा एवं यात्रा करता है उसके मनोरथ श्री अधिष्टायक देव पूरे करते हैं । श्री फलोदी पार्श्व प्रभु को नमस्कार कर के यह इतिहास यहीं समाप्त करता हूँ ।

पाठकगण त्रुटियों की ओर ध्यान न देकर तीर्थ का महत्व हृदयंगम करें और यात्रा का लाभ लें ।

जैनं जयति शासनम्

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पुस्तक मिलने का पता—

**बख्शी माणकचन्द जैन**

मारफत—श्री फलोदी पार्श्वनाथ महाविद्यालय

मेड़ता रोड (राजस्थान)

मुद्रक—लक्ष्मी प्रेस, बीकानेर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust